③ प्रत्युत्तर मांग – प्रत्युत्तर मांग का अर्थ एक वस्तु के लिए मांग की उन मात्राओं के परिवर्तन से है जो उस वस्तु विशेष की कीमत में परिवर्तन के कारण न होकर किसी अन्य सम्बन्धित वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण होता है। प्रत्युत्तर मांग स्थानापन्न वस्तुओं एवं पूरक वस्तुओं के सम्बन्ध में उत्पन्न होती है।

मांग सारणी तथा मांग वक्र

मांग सारणी वह है जो विभिन्न कीमतों पर किसी वस्तु की मांगी गई मात्रा बताती है। यदि हम ऐसी सारणी बना लें जिसमें यह प्रदर्शित किया जाय कि किसी समय विशेष पर बाजार में विभिन्न कीमतों पर कितनी कितनी मात्राओं में मांग होती है तो ऐसी सारणी को मांग सारणी कहते हैं। बेन्हम के अनुसार किसी बाजार में एक निश्चित समय पर दी हुई कीमतों पर जितनी मांग होती है यदि उसे एक सारणी के रूप में प्रस्तुत किया जाय तो वह मांग सारणी कहलाती है। मांग सारणी दो प्रकार की होती है। ① व्यक्तिगत मांग सारणी ② बाजार मांग सारणी। वस्तु की विभिन्न कीमतों पर किसी उपभोक्ता की वस्तु की मांग को बताने वाली सारणी को व्यक्तिगत मांग सारणी कहते हैं। व्यक्तिगत मांग सारणी नीचे की सारणी से स्पष्ट है

सेब की कीमत	10	8	6	4	2
राम की सेब की मांग	4	6	10	13	18

② वस्तु की विभिन्न कीमतों पर सम्पूर्ण बाजार की मांग को बताने वाली सारणी को बाजार मांग सारणी कहते हैं। जैसा सारणी से स्पष्ट है।

सेब की कीमत प्रति किलो	राम की मांग (किलो में)	श्याम की मांग (किलो में)	बाजार मांग
10	4	2	4+2 = 6
8	6	4	6+4 = 10
6	10	8	10+8 = 18
4	13	12	13+12 = 25
2	18	16	18+16 = 34.

यहां हम मानकर चलते हैं कि बाजार में राम एवं श्याम दो ही उपभोक्ता हैं, अतः बाजार मांग सूचि व्यक्तिगत मांग अनुसूचियों की सहायता से ही तैयार की जाती है। बाजार मांग अनुसूचि को गणितीय रूप में निम्न प्रकार बताया जा सकता है : $Q_d = f(P)$

Scanned with CamScanner

मांग वक्र — जब किसी वस्तु की विभिन्न मांग की मात्राओं और उससे सम्बन्धित कीमतों को रेखाचित्र में प्रदर्शित किया जाता है तो उसे मांग वक्र कहा जाता है। मांग वक्र कीमतों और उससे सम्बन्धित मांग की मात्राओं को रेखाचित्र के माध्यम से व्यक्त करते हैं। मांग वक्र दो प्रकार की होती है। (1) व्यक्तिगत मांग वक्र (2) बाजार मांग वक्र।

(1) **व्यक्तिगत मांग वक्र** — जो वक्र वस्तु की विभिन्न कीमतों पर किसी एक व्यक्ति की मांग को बताता है उसे व्यक्तिगत मांग वक्र कहते हैं। चित्र में व्यक्तिगत मांग वक्र को दिखाया गया है। वस्तु की विभिन्न कीमतों पर वस्तु की मांग को प्रदर्शित करने वाला यह वक्र स्पष्ट करता है कि कीमत एवं मांग में विपरीत सम्बन्ध होता है। DD मांग की रेखा है।

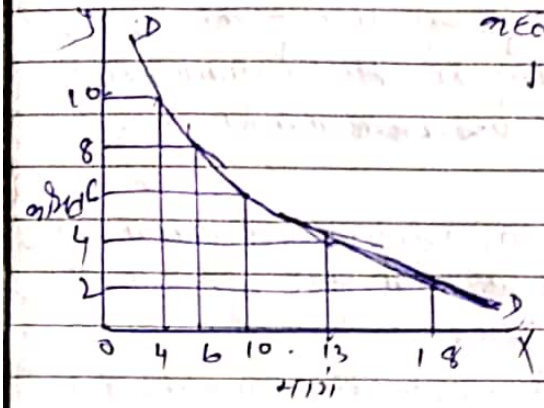

(2) **बाजार मांग वक्र** — ये वक्र वस्तु की विभिन्न कीमतों पर सम्पूर्ण बाजार की मांग को बतलाता है। यह वक्र बाजार मांग सारणी के आधार पर बनाया जाता है।

बाजार मांग वक्र को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत उपभोक्ता मांग वक्र को जोड़ने की प्रक्रिया को निम्न रेखा चित्र में बताया गया है।

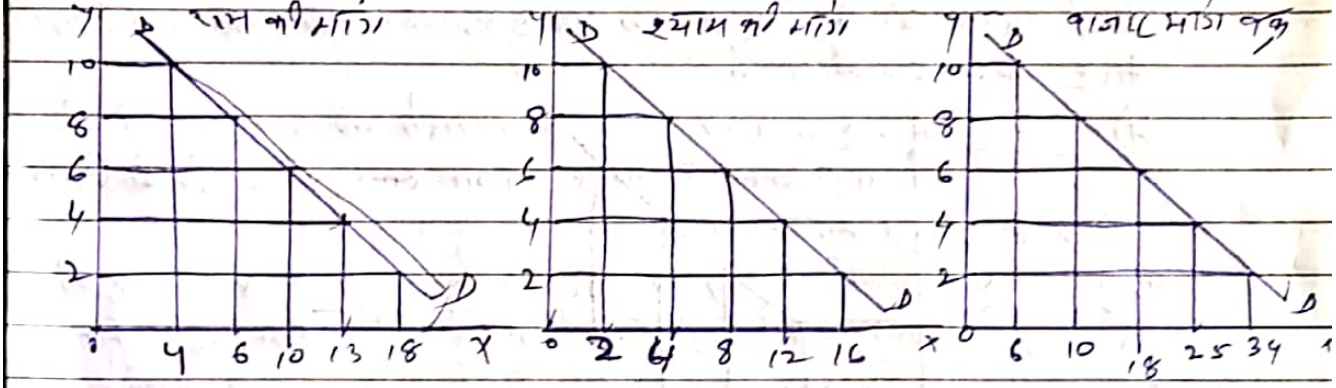

चित्र के अनुसार राम 10 रुपए की कीमत पर 4 इकाईयों की मांग करता है जबकि श्याम 2 इकाई की मांग करता है। इस प्रकार बाजार मांग वक्र में 10 रु० की कीमत पर मांग 6 इकाई की होती है। इस प्रकार विभिन्न कीमतों पर राम और श्याम की मांग को जोड़कर बाजार मांग वक्र बनाया जाता है।

मांग में विस्तार एवं मांग में वृद्धि :- साधारण बोलचाल की भाषा में मांग का विस्तार एवं मांग में वृद्धि में अन्तर नहीं किया जाता है। लेकिन अर्थशास्त्र की नजर में इनका अर्थ अलग-अलग होता है।

मांग का विस्तार — अन्य बातें समान रहने पर जब केवल कीमत में कमी होने से वस्तु की अधिक मात्रा खरीदी जाती है तो इसे मांग का विस्तार कहते हैं।

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

मांग में वृद्धि – जब कीमत के अलावा किन्हीं अन्य कारणों से उसी कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा या ऊँची कीमत पर वस्तु की उतनी ही मात्रा खरीदी जाती है तो उसे मांग में वृद्धि कहते हैं।

मांग का संकुचन एवं मांग में कमी :-

अन्य बातें समान रहने पर जब कीमत में वृद्धि होती है और इस कारण वस्तु की कम मात्रा खरीदी जाती है तो उसे मांग का संकुचन कहते हैं। (2) जब कीमत के अतिरिक्त किन्हीं अन्य कारणों से उसी कीमत पर वस्तु की कम मात्रा या नीची कीमत पर वस्तु की उतनी ही मात्रा खरीदी जाती है तो उसे मांग में कमी कहते हैं मांग में कमी से मांग वक्र बायीं ओर खिसक जाता है।

पूर्ति (Supply)

साधारण बोलचाल में पूर्ति और वस्तु की उत्पादित मात्रा में अन्तर नहीं किया जाता है। परन्तु आर्थिक विश्लेषण में पूर्ति और उत्पादन एक दूसरे के पर्यायवाची नहीं हैं। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत वस्तु की वह मात्रा जो एक निश्चित अवधि में एक निश्चित कीमत पर बाज़ार में बेची जाती है पूर्ति कहलाती है।

बेन्हम ने कहा है कि " पूर्ति का तात्पर्य वस्तु की वह मात्रा से लगाया जाता है जो प्रति इकाई में बिक्री के लिए उपलब्ध हो।

लिप्से के शब्दों में " पूर्ति एक प्रवाह है, यह प्रतिदिन, प्रति सप्ताह, प्रति माह या वर्ष व्यक्त किया जाता है।"

प्रो० मेयर्स — पूर्ति किसी वस्तु की मात्राओं की अनुसूची है जो विभिन्न कीमतों पर किसी विशेष समय या समय की अवधि में विक्रय के लिए प्रस्तुत की जाय"।

वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व :- एक वस्तु की पूर्ति बहुत सारी बातों पर निर्भर करती है। इनमें मुख्य निम्न हैं

(1) वस्तु की कीमत — वस्तु की पूर्ति को निर्धारित करने वाला सबसे प्रमुख कारक वस्तु की कीमत है। वस्तु की कीमत जितनी अधिक होगी उतनी ही अधिक मात्रा में उस वस्तु की आपूर्ति होती है। इसके विपरीत कीमत कम होने से पूर्ति भी कम होती है।

(2) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें — एक वस्तु की पूर्ति इसकी सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत और स्थानापन्न वस्तु की कीमतों पर निर्भर करती है। यदि एक वस्तु की स्थानापन्न वस्तु की कीमत में वृद्धि हो जाती है तो उत्पादक स्थानापन्न वस्तु की पूर्ति अधिक मात्रा में करता है।

(3) उत्पादकों के उद्देश्य — सामान्यतया प्रत्येक फर्म अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहती है। कई बार उत्पादक सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए अपने लाभों का त्याग कर ऐसी वस्तु का उत्पादन करता है जिससे उसकी प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि हो सके।

Scanned with CamScanner